

SMT. MUKTABEN PANKAJKUMAR DAGLI

Mrs. Muktaben Pankajkumar Dagli is the founder and Secretory of Pragnachakshu Mahila Seva Kunj, Surendranagar. She founded the Institution for Blind Women in the year of 1996 with four blind girls in a small tenement house. Today more than 200 Blind Women from Child to old age from most of the States of India are here in the Institution. She has developed her own technique of threading a needle by help of tongue and teeth for the blind.

2. Born on July 2, 1961, as a normal sighted girl, Mrs Dagli lost her eyes at the age of 7 years. Looking to the courage of Mukta, her family decided to educate her. She was sent for her primary education to Andh Udhyog Shala at Bhavnagar. Thereafter, she went to Andh kanya Prakash Grah, Ahmedabad for further education and got matriculated in 1982. She also took Diploma in teacher's training for the blind in the first grade.

3. After completion of her study, she got married with Shri Pankaj K. Dagli with a very momentous decision and firm understanding that they would not have their own issues in life but they would adopt thrown out blind girls. They committed to ensure the survival, protection, development, upliftment, empowerment and all happiness to under-privileged poor girls with impaired vision. With this vision she started work and never looked behind. With their tireless efforts, they provided grand facilities in a building consisting of more than 80000 Sq.ft. containing school, hostel, guest house and staff quarters at no cost. The facilities include primary education to degree courses, home science, music, hair and skin care, computer training, electric wiring, sewing and embroidery, physiotherapy, teacher's training, integrated education program and much more like old age home. Activities like cooking competition, Cricket and beauty contest have been started first time all over India for blind girls.

4. Mrs. Dagli's responsibilities do not end but new stage of life begins from here. After educating these girls, she finds perfect match for them and arranges marriage functions. About 190 girls' marriages have been performed so far and more than 70 first deliveries have been performed for the girls. Thus, Seva Kunj is a maternal home for these girls. About 900 blind women have been benefitted by the organization till today.

5. Mrs. Dagli is the recipient of two Rashtrapati Awards i.e. Juabai Hari Shakti Award (2001) and National Award for Empowerment of Persons with Disabilities (2008). She has also been awarded Gujrat Lik Kala Rashtriya Gaurav Purashkar, by Govt. of Gujarat in 2010. She has bagged numerous awards from reputed Social Welfare Organizations too.

पद्म श्री

श्रीमती मुक्ताबेन पंकजकुमार डगली



श्रीमती मुक्ताबेन पंकजकुमार डगली, प्रज्ञाचक्षु महिला सेवा पुज, सुरेंद्र नगर की संस्थापक और सचिव हैं। आपने नेत्रहीन महिलाओं के लिए वर्ष 1996 में चार नेत्रहीन बालिकाओं के साथ एक छोटे से चॉल में इस संस्थान की स्थापना की। आज भारत के अधिकांश राज्यों से बच्चियों से लेकर बड़ी उम्र तक की 200 से अधिक नेत्रहीन महिलाएं इस संस्थान में हैं। आपने नेत्रहीनों के लिए जिह्वा और दांतों की मदद से सुई में धागा पिरोने की स्वयं की तकनीक विकसित की।

2 आपका जन्म 2 जुलाई, 1961 को सामान्य दृष्टि वाली बालिका के रूप में हुआ था। आपने 7 वर्ष की आयु में अपनी आँखें गवां दी। आपके साहस को देखते हुए आपके परिवार ने आपको शिक्षित करने का निर्णय लिया। आपको प्राथमिक शिक्षा के लिए भावनगर के अंध उद्योगशाला में भेजा दिया गया। तत्पश्चात्, आप आगे की पढ़ाई के लिए अंध कन्या प्रकाश गृह, अहमदाबाद गई और वर्ष 1982 में मैट्रिक पास किया। आपने नेत्रहीनों के लिए शिक्षक प्रशिक्षण में प्रथम श्रेणी के साथ डिप्लोमा प्राप्त किया।

3. अपना अध्ययन पूरा करने के पश्चात, आपने श्री पंकज के. डगली के साथ इस महत्वपूर्ण निर्णय और दृढ़ समझ के साथ विवाह किया कि आप जीवन में स्वयं संतान को जन्म नहीं देंगे बल्कि त्याग दी गई नेत्रहीन बालिकाओं को गोद लेंगे। आपने वंचित निर्धन दृष्टिहीन बालिकाओं को बचाने, उनकी सुरक्षा करने, उनके विकास, उत्थान, सशक्तिकरण और खुशी सुनिश्चित करने का संकल्प लिया। आपने इस विजन के साथ कार्य आरंभ किया और कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। आपने अपने अथक प्रयासों से 80,000 वर्गफुट में फैले स्कूल, छात्रावास, गेस्ट हाउस और स्टाफ क्वार्टर वाले भवन में बड़ी सुविधाएं मुफ्त प्रदान की। इन सुविधाओं में प्राथमिक शिक्षा से डिग्री कोर्स, होम साइंस, म्यूजिक, हेयर और स्किन केयर, कंप्यूटर ट्रेनिंग, इलेक्ट्रिक वायरिंग, सिलाई, कढ़ाई, फिजियोथेरेपी, टीचर्स ट्रेनिंग, इंटीग्रेटेड एजुकेशन प्रोग्राम और वृद्धाश्रम जैसी कई सुविधाएं शामिल हैं, दृष्टिहीन बालिकाओं के लिए भारत भर में पहली बार कुकिंग प्रतियोगिता, क्रिकेट और ब्यूटी कॉन्टेस्ट जैसी गतिविधियां शुरू की गई हैं।

4. आपका जिम्मेदारियां यहाँ समाप्त नहीं होती हैं बल्कि यहां से आपके जीवन का एक नया अध्याय आरंभ होता है। इन बालिकाओं को शिक्षित करने के बाद आप उनके लिए उपयुक्त जीवनसाथी का चुनाव करती हैं और विवाह समारोहों के आयोजन की व्यवस्था करती हैं। अब तक लगभग 190 बालिकाओं का विवाह संपन्न कराया गया है और 70 से अधिक प्रसव कराए गए हैं। इस प्रकार, सेवा कुंज इन बालिकाओं लिए मायके के समान है। इस संगठन से आज तक लगभग 900 दृष्टिहीन महिलाएं लाभान्वित हुई हैं।

5. आपको दो राष्ट्रपति पुरस्कारों से नवाजा गया है जो जुआबाई हरि शक्ति पुरस्कार (2001) और विकलांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार (2008) हैं। आपको वर्ष 2010 में गुजरात सरकार द्वारा गुजरात लोक कला राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। आपको प्रतिष्ठित समाज कल्याण संगठनों से भी कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।